RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 45, अंक : 14 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 28 जून, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–45, अंक : 14, 25-28 जून 2020 तदनुसार 15 आषाढ़, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

सरस्वती को जाने वाली पाँच नदियाँ

ले०-स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

-यजुः० ३४।११

शब्दार्थ-सस्रोतसः= स्रोतों सहित **पञ्च=** पाँच **नद्यः=** नदियाँ **सरस्वतीम्=** सरस्वती को **अपि=** भी **यन्ति=** जाती हैं। **सा+उ=** वही **सरस्वती=** सरस्वती **तु=** भी **देशे=** देश में **पञ्चधा=** पाँच प्रकार की **सरित्=** नदी **अभवत्=** हो गई है।

व्याख्या-यह किसी भौतिक नदी का वर्णन नहीं है। भौतिक नदी का वर्णन होता तो मन्त्र में 'सस्रोतसः' पद न होता, केवल **'पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति'** [पाँच नदियाँ सरस्वती को जा रही हैं] इतना ही होता। यहाँ 'सरस्वती'-सरित्-सरस्वती नदी से अभिप्राय आत्मा है। पाँच नदियाँ पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, उनके स्रोत उनके विषय हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ अपने विषय-प्रवाहों के साथ आत्मा को प्राप्त हो रही हैं। तात्पर्य यह है कि आँख-नाक आदि ज्ञानेन्द्रियों का अपना कोई प्रयोजन नहीं है। आत्मा को रूप, रस, शब्द, स्पर्श, गन्ध का ज्ञान कराना इनका एकमात्र प्रयोजन है। दूसरे शब्दों में आत्मा के ये सहायक या करण हैं। प्रवाहों के साथ=विषयों के साथ ये आत्मा को प्राप्त होती हैं, अर्थात् आत्मा इन विषयों को ग्रहण करता है। दूसरे शब्दों में आत्मा इनका भोक्ता है। आत्मा को 'सरस्वती' कहने का विशेष प्रयोजन है। 'सरस्वती' शब्द का अर्थ है प्रवाहवाली। शरीर आदि आते-जाते रहते हैं, किन्तु आत्मा का प्रवाह बना रहता है। प्रवाह कभी स्वच्छ होता है कभी मलिन। कभी आत्मा में अज्ञान के कारण पापवासनाओं का प्रवाह बहने लगता है, कभी सुसंस्कारों के जागने से भव्य भावों का बहाव बहने लगता है। हाँ, यह प्रवाह सदा बना रहता है।

श्रोत्रेन्द्रिय आत्मा में शब्द को पहुँचाती है, स्पर्शेन्द्रिय स्पर्श का ज्ञान कराती है, चक्षुः रूप का निरूपण करती है। रसना रस चखाती है, घ्राणेन्द्रिय गन्ध सुँघाती है। इन शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध के संसार पाँच प्रकार के होते हैं, अतः कहा-**'सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्'** = सरस्वती भी देश में पाँच प्रकार की नदी हो गई, अर्थात् आत्मा पाँच प्रकार के संस्कारों के अनुसार व्यवहार करने लगता है। आत्मा संस्कार के वशीभूत होकर विचित्र कार्य करता है। ज्ञानेन्द्रियाँ पाँच हैं तो कर्मेन्द्रियाँ भी पाँच हैं। आत्मा की भावना को बाहर लाने का द्वार कर्मेन्द्रियाँ हैं। शरीर आत्मा का देश है। वहाँ ही आत्मा-सरित् पाँच प्रकार से बह रही हैं। चाहो, बाहर की नदियों के स्रोत बन्द कर दो, तब प्रवाह एक हो जाएगा। इस बात को कठोपनिषद् [१।६।१०] में यों कहा-**'यदा पंचावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह। बुद्धिश्च न विचेष्टते तामाहुः परमां गतिम्'**-जब मन के साथ पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ ठहर जाती हैं और बुद्धि भी क्रिया नहीं करती, उसे परम गति कहते हैं। जब तक ये पाँचों नदियाँ चल रही हैं, शरीरस्थ आत्मा-सरित् भी पाँच प्रकार की होती रहेगी।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि।।

-उ० ९.२.११

भावार्थ-हे सर्वशक्तिमान् परमात्मन्! आप महासमर्थ और हमारे पिता, भ्राता, सखा आदि रूप हैं। हम पर कृपा करो कि हम ब्रह्मचर्यादि साधन सम्पन्न होकर, पवित्र और बहुत काल तक जीवन वाले बनें, जिससे हम अपना कल्याण कर सकें। आप महापवित्र और पतित पावन हैं, हमारी इस प्रार्थना को स्वीकार कर, हमें पवित्र, दीर्घजीवी बनावें, जिससे आपकी भक्ति और पर उपकार आदि उत्तम काम करते हुए हम अपने मनुष्य जन्म को सफल कर सकें।

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

-उ० ९.३.९

भावार्थ-हे पूजनीय परमात्मन्! वा विद्वानो! हम पर ऐसी कृपा करो कि, हम कानों से सदा कल्याणकारक वेद-मन्त्र और उनके व्याख्यान रूप सदुपदेशों को सुनें, आँखों से कल्याणकारक अच्छे दृश्य को ही हम देखें, हम अपनी वाणी से आपके ओंकारादि पवित्र नामों को और सबके उपकारक प्रिय व सत्य शब्दों को कहें, ऐसे ही हमारे हस्त पाद आदि अङ्ग और शरीर, आपकी सेवा रूप संसार के उपकार में लगें, कभी अपने शरीर और अंगों से किसी की हानि न करें। हम सम्पूर्ण आयु को प्राप्त हों वह आयु, आपकी सेवा वा विद्वान् धर्मात्मा महात्मा सन्त जनों की सेवा के लिए हो।

अरण्योर्निहितो जातवेदा गर्भ इवेत्सुभृतो गर्भिणीभिः।
दिवेदिव ईड्यो जागृवद्भिर्हविष्मद्भिर्मनुष्येभिरग्निः।।

-पू० १.२.८.७

भावार्थ-हम मुमुक्षु पुरुषों के कल्याण के लिए वेदों का प्रकट करने वाला परमात्मा हमारे हृदयों में अन्तर्यामी रूप से सदा वर्त्तमान है। जैसे यज्ञ में अरणी रूप काष्ठों में अग्नि वर्त्तमान है। ऐसे हम सबके हृदय में वह अदृश्य रूप से सदा वर्त्तमान है ऐसा सर्वगत परमात्मा, जागरणशील, सावधान, प्रेम-भक्तिवाले मनुष्यों से प्रतिदिन स्तुति के योग्य है। जो पुरुष सावधान होकर उस परमात्मा की प्रेम से भक्ति करेगा उसी का जन्म सफल होगा।

आध्यात्मिक चिन्तन और कोरोना काल

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक 163, आदर्श नगर, फरीदकोट

आज हम अत्यन्त विकट स्थिति से गुज़र रहे हैं। कोरोना जैसी भयानक महामारी ने हमें किं कर्त्तव्य विमूढ़: की अवस्था में पहुँचा दिया है। लोग कहते हैं हम भारतीय विदेशों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं क्योंकि भारत में तुलनात्मक दृष्टि से मृत्युदर कम है। आत्मसन्तोष के लिए यह विचार अच्छा है। मगर इस महामारी ने सब तहस नहस कर दिया है। जीवन नीरस सा हो गया है। लगता है हम अपने ही घर में बन्दी के समान जी रहे हैं। हम अपनी भावनाओं संवेदनाओं का गला घोंट कर जी रहे हैं। भय और पीड़ा से अवसाद ग्रस्त हो रहे हैं। अभी तक इसका कोई ईलाज कोई समाधान भी नहीं मिल पा रहा है। विज्ञान की प्रगति और विकास भी हमें कोई निराकरण प्रस्तुत करता दिखाई नहीं दे रहा है। अब पुरानी पीढ़ी के लोग यह कहते सुने गए है कि हमारा जमाना अच्छा था। प्रकृति की गोद में खुली हवा में साँस लेना, बिना रासायनिक खाद के फल सब्जी अनाज खाना, भ्रातृभाव से जीना, दूसरों के सुख दुख में सहायक होना। उत्सवों-त्योहारों परम्पराओं को एक साथ मनाना। कितना सुखमय जीवन था। हमारी संस्कृति एक महान संस्कृति है। मगर जो पौधा अपनी जड़ से कट जाता है। वह सूख जाता है। हमने अपनी अमीर विरासत रूपी संस्कृति को त्याग कर पश्चिमी संस्कृति को अपनाने की कोशिश की तो कौआ चला हंस की चाल अपनी भी भूल गया की स्थिति हो गई। हमने अपने जीवन मूल्यों और जीवन शैली को त्याग दिया और विदेशी खान पान, रहन-सहन और बोलचाल को अपना लिया। हमने प्रकृति के साथ भी खिलवाड़ किया। हमारी संस्कृति में प्रकृति की पूजा होती है। वृक्षों, नदियों, पर्वतों, पशुओं और पक्षियों तक की पूजा की जाती है। उन्हें सम्मान दिया जाता है क्योंकि प्रत्येक वस्तु और जीव समाजोपयोगी है। हमारे ऋषियों ने वेदों, उपनिषदों, पुराणों के रूप में जो अमर साहित्य हमें प्रदान किया। हमने जीवन में उसका महत्व ही खो दिया। हमारी यज्ञ परम्परा, गुरुकुल प्रणाली हमारे पर्व, उत्सव हमारी परम्पराएँ रीति-रिवाज, तप, त्याग, तपोवन सब आधुनिकता के गर्त में समा गया।

हमारे वैयक्तिक और सामाजिक मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन हो रहा है। भौतिक विकास ने आध्यात्मिक ज्ञान को कहीं पीछे छोड़ दिया है। हम जिस जगद्गुरु भारत की बात करते हैं। उसका स्वरूप अब बदल चुका है। अब हम पुन: उस विचारधारा की ओर लौट रहे है।

वेदों में आदर्श जीवन जीने के लिए अपनी इन्द्रियों को वश में रखने और इनका सदुपयोग करने की बात कही गई है। हमें वेदों के द्वारा ऐसी सम्पदा प्रदान की गई है जिससे हम अकाल मृत्यु से भी बच सकते हैं और ईश्वर द्वारा नियत आयु पूरी कर सकते है। यजुर्वेद में कहा गया है-

भद्र कर्णेभि: श्रृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा:।

स्थिरै रङ्गै स्तुष्टवा सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायु:।।

यजुर्वेद-25/21

अर्थात् हे दिव्य गुण युक्त सृष्टि यज्ञ के विधाता प्रभु! हम आपकी कृपा से कानों से उत्तम शब्द ही सुन, आँखों से अच्छा ही देखें, स्थिर सुदृढ़ अंगों और शरीरों से आपकी ही स्तुति करते हुए आपके द्वारा हमारे कर्मानुसार नियतायु को पूर्ण रूप से प्राप्त होवे। अकाल मृत्यु के ग्रास न बने।

आदर्श जीवन धार्मिक ग्रन्थ का पठन पाठन करने तथा महापुरुषों की संगति करने से निर्मित होता है। सद्गुणों की प्राप्ति के साथ साथ मनुष्य को सत्कर्म दुष्कर्म, पाप-पुण्य, स्वर्ग, नरक आदि में अन्तर ज्ञात हो जाता है। वैदिक काल में यह सभी बातें गुरुकुलों में गुरुओं के द्वारा बचपन में ही विद्यार्थियों को बता दी जाती थी। इन्हीं आध्यात्मिक मान्यताओं के कारण भारत विश्वभर में अपनी महान संस्कृति के कारण प्रतिष्ठित था और विश्व में आध्यात्मिक गुरु के पद पर आसीन था। तपोभूमि में प्रवेश करते समय राजा लोग भी ऋषियों से सम्मुख नतमस्तक होते थे। भारतीय दर्शन शास्त्र में अध्यात्म की शिक्षा प्रदान की जाती थी। अध्यात्म का सन्धिविच्छेद करने पर अधि+आत्म दो शब्दों का बोध होता है। अधि का अर्थ हैं समीप या पास। आत्म का अर्थ है स्व अर्थात् अपना। उसका अर्थ है अपने (स्व) पास आना। स्वयं को जानने का प्रयास करना। आत्मज्ञान ही अध्यात्म का मुख्य विषय है। आज न तो वैसी शिक्षा है न वैसी शिक्षा का वातावरण। आत्मज्ञान को जीवन का प्रयोजन माना गया है। हमारे धर्म ग्रन्थों में आत्मा परमात्मा के विषय में अनेक तर्क और प्रमाण प्रस्तुत किए गये है। गुरु की इसमें विशेष भूमिका रहती है। गुरु प्रदत्त ज्ञान द्वारा ही मनुष्य आत्म ज्ञान में सफल हो पाता है। इसके लिए योग, प्राणायाम, साधना, ध्यान आदि के द्वारा इन्द्रिय निग्रह करके मन को साध कर ही मनुष्य अपने जीवन के रहस्यों को जान पाता है। मन चंचल होने के कारण ही मोक्ष और बन्धन का कारण भी है। कहा भी है।

मन एवं मनुष्याणां कारणम् बन्धमोक्ष्यो:।

मन के हारे हार है मन के जीते जीत के अनुसार जीवन में सफलता के लिए मन को जीतना आवश्यक है।

मन को अत्यन्त शक्तिशाली माना गया है। यह ईश्वर स्वरूप कहा गया है। अत: जो अपने मन को जान लेता है। वह ईश्वर को भी जान लेता है। गुरवाणी में कहा गया है मन तू जोति सरूप है। अपना मूल पछान इसके लिए कठिन तप और त्याग की आवश्यकता होती है। बाहरी संसार की अपेक्षा अन्दर का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है। अपने चरित्र को गुणों को अवगुणों को जानकर ही हम स्वयं को जान सकते हैं। इसके बाद फिर वाणी मौन हो जाती है। कबीर जी ने इस अनुभव को गूंगे का गुड़ कहा हैं।

आत्म अनुभव ज्ञान की जो कोई पूछे बात।

सो गूगों गुड़ खाई के कहे कौन मुख स्वाद।।

इसके लिए मनुष्य को योग साधना ध्यान और अन्त: मनन के द्वारा चंचल मन को नियन्त्रण कर अपने अन्दर दृढ़ संकल्प और इच्छा शक्ति द्वारा मनोबल को सुदृढ़ करना चाहिए।

आज हम कारोना-जैसी विषम और विकृतस्थिति का सामना करने में स्वयं को अक्षम और असमर्थ अनुभव कर रहे हैं। कुछ लोगों को इस बीमारी से ग्रसित होने के बाद स्वस्थ होते भी सुना है। इस बात को हमें ध्यानपूर्व समझना होगा। शारीरिक क्षमता के साथ-साथ हमारे अन्दर एक अन्य क्षमता भी काम करती है वह है आस्था और विश्वास भारत में रहने वाला कोई भी व्यक्ति वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ग व श्रेणी का क्यों न हो किसी न किसी धर्म, सम्प्रदाय व आस्था से सम्बद्ध होता है। उसमें उसका दृढ़ विश्वास भी रहता है। अगर वह अपनी उस आस्था पर अडिग है तो उसके अन्दर सकारात्मक शक्ति में वृद्धि होने लगती है। उसके अन्दर एक इच्छा शक्ति प्रबल होने लगती है। जिसे हम जिजीविषा कहते है। इसे दृढ़ इच्छा शक्ति या दृढ़ विश्वास भी कह सकते है। इसी से व्यक्ति का मनोबल बढ़ता है और नकारात्मक शक्ति नष्ट होने लगती है। हमने बहुत से ऐसे किस्से, कहानियां और घटनाएं सुनी है जिससे राजाओं ने हारे हुए युद्ध जीते है। हारी जैसी टीम ने खेलों में विजय प्राप्त की है। अनेक रोगियों ने रोगों पर विजय प्राप्त की है। अनेक विद्यार्थियों ने परीक्षाओं में सफलता प्राप्त की है। इसी को आत्म विश्वास कहते हैं।

मानव जीवन में सत्य और सात्विक गुणों के धारण करने पर मनुष्य के अन्दर क्षमा, दया, सहनशीलता, ईमानदारी जैसे गुण स्वत: पैदा हो जाते है। मनुष्य अच्छे गुणों और महान चरित्र वाला हो जाता है। वह समाज में सम्मान का पात्र बनता है और लोग उसका अनुसरण

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

लद्दाख की गलवान घाटी में शहीद भारतीय वीरों को शत्-शत् नमन

लद्दाख घाटी में 20 भारतीय वीरों की शहादत पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब उन वीरों को नमन करते हुए अपने श्रद्धासुमन अर्पित करती है। माता भूमिपुत्रोऽहं पृथ्व्याः, वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम अर्थात् यह भूमि हमारी माता है और हम इसके पुत्र हैं। इसकी रक्षा के लिए हम स्वयं को भी न्यौछावर कर देंगे। भारतीय वीरों ने इस भावना को सार्थक करते हुए चीनी फौज का मुकाबला करते हुए अपने प्राणों का बलिदान किया। ऐसे महान् वीरों पर हमें गौरव होना चाहिए।

लद्दाख की गलवान घाटी में चीनी सैनिकों द्वारा किया गया हमला उसकी कायरतापूर्ण कार्रवाई को उजागर करता है। इस तरह पीठ के पीछे से वार करना कायरता का कार्य है। इस हमले में 20 जवानों की शहादत के बाद समूचा देश गुस्से में है। देश की जनता चीन को लेकर तनिक भी मौका देने के पक्ष में नहीं है। लोग सवाल कर रहे हैं कि आखिर कब तक हमारे जवान इस तरह शहीद होते रहेंगे। भारतीय सैनिकों पर हुआ हमला दिखाता है कि चीन अपनी हरकतों से बाज आने वाला नहीं है। चीन अपनी विस्तारक नीति के कारण पड़ोसी देशों के साथ सीमा पर विवाद को बढ़ा रहा है। भारतीय सीमा पर पिछले कुछ समय से चीन अपनी आँखें दिखाने की कोशिश कर रहा है।

भारत के प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सर्वदलीय बैठक में कहा है कि भारत पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर है। हम शान्ति चाहते हैं परन्तु हमारी शान्ति को हमारी कमजोरी न समझा जाए। हमारी भारतीय सेना सभी मोर्चों पर मुकाबला करने में सक्षम है और उन्हें यथोचित कार्यवाही करने की छूट दे दी गई है। हमारी सीमाओं की ओर आँख उठाकर देखना किसी के लिए भी संभव नहीं है। भारत शान्ति और दोस्ती चाहता है लेकिन अपनी संप्रभुता सर्वोपरि है। उन्होंने कहा कि हमारी एक इंच जमीन के ऊपर चीन का कब्जा नहीं है और न ही हमारी कोई पोस्ट चीन के कब्जे में है। उन्होंने सभी दलों को आश्वस्त करते हुए कहा कि हम चीन के साथ निपटने के लिए पूर्ण रूप से सक्षम हैं।

चीन ने भारत के भरोसे पर आघात करके न केवल भारतीयों के बीच खुद को खलनायक साबित किया है, बल्कि अपनी उस वैश्विक छवि को भी धूमिल कर लिया है जो कोरोना संकट के कारण पहले ही सवालों में घिरी हुई है। चीन की इस कायराना हरकत के कारण दोनों देशों के बीच जो मतभेद पैदा हुआ है वह अब आसानी से दूर होने वाला नहीं है। चीन ने भारत को अपने खिलाफ नीति बदलने के लिए मजबूर कर दिया है। 20 भारतीय नौजवानों की शहादत का आक्रोश भारत के लोगों में साफ तौर पर देखा जा सकता है। कहीं पर चाईनीज सामानों की होली जलाई जा रही है तो कहीं पर चीनी वस्तुओं के बहिष्कार को लेकर चीन को सैन्य मोर्चे पर सबक सिखाने की बात उठ रही है। एक राष्ट्र के नागरिक के रूप ऐसी प्रखर अभिव्यक्तियां स्वाभाविक हैं। इन अभिव्यक्तियों से अपने देश और मातृभूमि के प्रति जिम्मेवारी होने का अहसास होता है।

भारतीय जवानों पर कायरतापूर्ण हमले से देश में चीन के खिलाफ आर्थिक बहिष्कार की मांग उठने लगी है। देश में चीन निर्मित वस्तुओं के बहिष्कार का आह्वान किया जा रहा है। इस बहिष्कार को पूर्ण रूप से आत्मसात करने की आवश्यकता है। आज चीन निर्मित वस्तुओं ने भारतीय बाजार पर कब्जा किया हुआ है। बाजारों में चीन निर्मित हर वस्तु कम मूल्य पर उपलब्ध हो जाती है। इसलिए लोगों ने उन्हें अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। चीन निर्मित वस्तुओं का हमारे जीवन में इस कदर उपयोग बढ़ा है कि सुई से लेकर मोबाईल, पूजा सामग्री से लेकर बिजलीघरों के संयंत्र तक के लिए हम उस पर निर्भर हैं। इससे हमें 57 अरब डॉलर का व्यापार घाटा चीन के साथ झेलना पड़ रहा है। भारत के स्मार्ट फोन बाजार में 65 फीसद चीन का कब्जा है। आज देश नवीनीकृत ऊर्जा के संसाधनों के विकास में जिस तेज गति से बढ़ रहा है, उसमें सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, लेकिन 75 प्रतिशत सोलर पैनल के लिए हम चीन पर निर्भर हैं। इसी तरह देश में 44 प्रतिशत प्लास्टिक चीन से आता है। अगर भारत जैसा विशाल देश चीन का आर्थिक रूप से बहिष्कार कर दे तो चीन की अर्थव्यवस्था को चोट पहुँचाई जा सकती है। चीन के लिए भारत सबसे बड़ा बाजार है। इसलिए सभी देशवासियों को चीन निर्मित वस्तुओं का पूर्णरूप से बहिष्कार करना चाहिए। स्वदेशी को प्राथमिकता देकर हम अपने देश के प्रति दायित्व का निर्वहन कर सकते हैं।

चीन ने सांस्कृतिक रूप से भी भारत की संस्कृति को नष्ट करने का भरसक प्रयास किया है। टिकटॉक जैसे एप्प बनाकर हमारे देश की युवा पीढ़ी को पतन की ओर धकेल दिया है। इसके अलावा और भी अश्लील एप्प बनाकर हमारी युवा पीढ़ी को बर्बाद किया जा रहा है। टिकटॉक और हैलो जैसे एप्प राष्ट्र विरोधी सामग्री परोसने का काम कर रहे हैं। चीन की चालाकी का पता इसी बात से लगाया जा सकता है कि अपने उत्पादों पर मेड इन चाईना की जगह भ्रम पैदा करने के लिए पीआरसी यानि रिपब्लिक ऑफ चाइना शब्द का प्रयोग कर रहा है।

चीन की धोखेबाजी पर जब देश को न केवल एकजुट होना चाहिए था बल्कि एकजुट दिखना भी चाहिए था, ऐसे दुर्भाग्यपूर्ण समय में कुछ राजनीतिक दल अपनी रोटियां सेंकने का प्रयास कर रहे हैं। विपक्षी दल इस प्रकार का व्यवहार कर रहे हैं जैसे गलवन घाटी का मामला चीन और भाजपा के बीच का हो। इन लोगों के गैर जिम्मेदाराना बयान साबित कर रहे हैं कि राजनीति में डूबे नेता अपने स्वार्थ के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। इस मुश्किल की घड़ी में जहां देश को एकजुट होना चाहिए ऐसे समय में कई विपक्षी दल अपनी अपरिपक्वता का परिचय देते हुए प्रधानमन्त्री जी से पूछ रहे हैं कि आप कहाँ छिपे हो, बाहर क्यों नहीं आते, हमारे सैनिकों को बिना हथियार के सीमा पर किसने भेजा? ऐसे बयान हमारे नेताओं को शोभा नहीं देते। इसलिए सभी दलों के नेताओं को समझना चाहिए कि ऐसे समय में सभी को एकजुट होकर बाहरी शत्रु का मुकाबला करना चाहिए।

विदुर नीति में कहा गया है क्षमा बहुत बड़ी शक्ति होती है परन्तु इसके साथ एक ही दुर्भाग्य जुड़ा होता है कि क्षमाशील व्यक्ति को मूर्खजन कायर मान लेते हैं। यही बात भारत व चीन के बीच है। भारत जितना सहष्णि देश है, चीन उतना ही बार-बार भारत को उकसाने का प्रयास कर रहा है। भारत बार-बार इच्छा करता है कि चीन पड़ोसी देश है एक दिन समझ जाएगा परन्तु चीन बार-बार भारतीय सीमा में घुसने का प्रयास करता है इसलिए अब उचित समय आ गया है कि क्षमाभाव को छोड़कर शठे शाठ्यं समाचरेत् वाली कहावत के अनुसार दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करते हुए उसे सबक सिखाया जाए। चीन का पूर्ण रूप से बहिष्कार होना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

उपनयन व वेदारम्भ संस्कार का संक्षिप्त परिचय

ले.-आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ज्ञान विहार, निकट आर्यसमाज आत्मानन्द धाम, बिजनौर (उ.प्र.)

(गतांक से आगे)

''तद्यदेनांस्तपस्यमानान्ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत् त ऋषयोऽभवन् तदृषीणामृषित्वम्।''

अर्थात् (तद्यदेनांस्तपस्यमानान्) तो जो इन तप करते हुओं को (ब्रह्म) ईश्वरीय ज्ञान प्रकट हुआ है, वह ज्ञान किस प्रकार प्रकट हुआ है, इस पर कहते हैं:- (स्वयम्भू) वह अपने आप होने वाला ज्ञान है। अर्थात् इसे नेत्रादि इन्द्रियों से नहीं देखा गया, इस ज्ञान के लिये कोई अनुमान लगाने की चेष्टा भी नहीं की गयी, शब्द प्रमाण से भी यह ज्ञान किसी भद्र पुरुष के बताने पर नहीं हुआ है। इस स्वयमागत विज्ञान के लिये योगी केवल यही कह सकता है- (अभ्यानर्षत्) आ गया अर्थात् हृदय गुफा से निकला देख लिया, दर्शन हो गया। इस प्रकार का आन्तरिक दर्शन करने वाले (तऋषयोऽभवन्) वे मनुष्य ऋषि हुए (तदृषीणामृषित्वम्) वहीं ऋषियों का ऋषिवन है। इस प्रकार के उन महान् ऋषियों के बनाये हुए शास्त्रों का जो कि ब्रह्म से पूछ-पूछकर रचे गये हैं, उनका प्रतिदिन स्वाध्याय करना व उस स्वाध्याय से प्राप्त ज्ञान गंगा को आगे-आगे समाज में प्रवाहित करते रहने का स्मरण यज्ञोपवीत का पहला सूत्र कराता है। आज का मानव सांसारिक अभ्युदय में ही संलग्न है। इस कारण वह अध्ययन तो बहुत कर रहा है किन्तु स्वाध्याय से विमुख होता जा रहा है, यह बात उसके वास्तविक विकास को रोक रही है। देखो, जब मन के चिन्तन का प्रवाह व उसका फल बाहर की ओर हो, वह 'अध्ययन' है और जब मन के चिन्तन का प्रवाह व फल आन्तरिक अर्थात् मन, आत्मा व परमात्मा के लिये हो, उस आन्तरिक अध्ययन का नाम स्वाध्याय है। इस 'स्वाध्याय' के बिना न सत्य का बोध हो पाता है और न ही धर्म के प्रति समर्पण। इसलिये बहुत से स्वाध्यायहीन लोग धर्म से पतित होकर साम्प्रदायिक कीचड़ में फंस जाते हैं। इसलिये स्वाध्याय को अपना नित्य कर्म बना लेना चाहिये। यह यज्ञोपवीत के एक सूत्र से प्राप्त संकल्प है।

यज्ञोपवीत का दूसरा सूत्र माता पिता आदि के द्वारा हम छोड़े गये ऋण की याद करता है। इस ऋण से मुक्त होने के लिये हमें भी उत्तम सन्तानों का निर्माण व माता पिता आदि की श्रद्धापूर्वक सेवा शुश्रूषा करनी योग्य है तथा तीसरा सूत्र यज्ञोपवीत के परमेश्वर देवता के ऋण को बताता है। इस ऋण से मुक्त होने के लिये जैसे परमात्मा सबका भला करता है वैसे हम भी सबका कल्याण और नित्य प्रति ईश्वर की उपासना भी किया करें, जिससे कि मोक्ष पर्यन्त सब फल सिद्ध हो सकें। इस प्रकार से यह यज्ञोपवीत, विद्याऽध्ययन, यज्ञ व तीन ऋणों से मुक्त होने के संकल्प का सूचक है। यह संस्कार प्रथम घर में व तत्पश्चात् गुरुकुल में किया जाता है।

संस्कारों के क्रम में उपनयन संस्कार से संयुक्त 11वां संस्कार वेदारम्भ संस्कार है। जो दिन उपनयन संस्कार का है, वही दिन वेदारम्भ का है। यदि वेदारम्भ उस दिन न हो सके तो दूसरे दिन कर लें। 'विद्' ज्ञाने धातु से 'घञ्' प्रत्यय करके 'वेद' शब्द बनता है, वेदस्याध्ययनमारम्भ इति वेदारम्भः। यह संस्कार गायत्री मन्त्र से लेकर वेदों का ज्ञान कराने में सहायक सब वेदांग पुस्तकों सहित चारों वेदों का अध्ययन करने के लिये व्रत लेने का संस्कार है। साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने असाक्षात्कृतधर्मा मनुष्यों के लिये सरलता से वेद के पठन-पाठन के लिये वेदाङ्गों का निर्माण किया है। जैसे वृक्ष की शाखाओं से वृक्ष की पहचान होती है, वैसे वेदाङ्गों से वेदार्थ पहचाना जाता है, इसलिये उन्हें वेदाङ्ग कहते हैं। ''अङ्ग्यन्ते गम्यन्ते ज्ञायन्ते अमीभिरिति अङ्गानि, वेदस्य अङ्गानि वेदाङ्गानि'' अर्थात् जिन साधनों से किसी वस्तु के स्वरूप का ज्ञान होता है, उन्हें अङ्ग कहते हैं। इस व्युत्पत्ति के अनुसार वेदार्थ का परिज्ञान कराने में सहायक ग्रन्थों को वेदाङ्ग कहते हैं। भाषा और भाव की दृष्टि से गम्भीर वेद के अध्ययन के लिये वेदाङ्ग आवश्यक हैं। ऋषियों ने वेदाङ्ग नाम से छः शास्त्रों की रचना की:-

शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां च यः।
ज्योतिषामयनं चैव वेदाङ्गानि षडैव तु।।

अर्थात् शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्दस् व ज्योतिष नामक छः वेदाङ्ग हैं। इनके द्वारा वेदाऽध्ययन करने की योग्यता प्राप्त होती है। योग्य विद्वान् तथा तपस्वी ही वेदवाणी के रहस्य को समझ सकता है। इस विषय को ऋग्वेद के प्रमाण के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखते हैं:-

उत त्व पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रृणोत्येनाम्।
उतो त्वस्मै तन्वं विससे जायेव पत्य उशती सुवासाः।।

जो अविद्वान् हैं, वे सुनते हुए नहीं सुनते, देखते हुए नहीं देखते, बोलते हुए नहीं बोलते अर्थात् अविद्वान् लोग इस विद्या वाणी के रहस्य को नहीं जान सकते। किन्तु जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध का जानने वाला है, उसके लिए जैसे सुन्दर वस्त्र, आभूषण धारण करती, अपने पति की कामना करती हुई स्त्री अपना शरीर और स्वरूप का प्रकाश पति के सामने करती है, वैसे विद्या विद्वान के लिए अपना स्वरूप प्रकाश करती है, अविद्वानों के लिए नहीं।

वेद सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त परमात्मा की वाणी है। परमात्मा ने अपना वेद नामक ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक चार पात्र ऋषि-आत्माओं को साधन बनाकर उनके द्वारा संसार को प्रदान किया। सर्वव्यापक परमात्मा ने उन चार आत्माओं में विद्यमान होने से उन आत्माओं में पहले अपने पवित्र ज्ञान वेदों का प्रकाश करके फिर उन ऋषियों के मुख से अन्य मनुष्यों के लिये मन्त्रों का उच्चारण ऐसे कराया जैसे कोई वादक वाद्ययन्त्र से अपना इच्छित नाद निकालता है। इसलिये वेद रूप नाद उन ऋषियों का नहीं अपितु भगवान् का नाद है। भगवान की वाणी वेद सब सत्य विद्याओं का भण्डार है। इसलिये वेद का पढ़ना-पढ़ाना हम सबका परमधर्म है। वेदाऽध्ययन के इस परमधर्म का पालन करने के लिये प्रभु के द्वार यज्ञवेदी पर बैठकर वहां पर उपस्थित महापुरुषों के मध्य में अपना वेदारम्भ संस्कार कराकर व्रत लेना विद्यार्थी का आवश्यक कर्त्तव्य है। सभी संस्कार स्त्री पुरुषों के तुल्य रूप से किये जाते हैं। परमपिता परमात्मा के वेद रूप ज्ञानसमुद्र में प्रवेश करना कल्याण व उन्नति के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं। महर्षि मनु महाराज लिखते हैं:-

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः।।

अर्थात् जो द्विज वेद को छोड़कर वेदेतर परिश्रम करता है वह जीते जी ही सम्बन्धियों सहित शीघ्र शूद्रता को प्राप्त हो जाता है। इसलिये वेद का पढ़ना-पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म है।

वेदारम्भ संस्कार में आचार्य के द्वारा होने वाले गायत्री मन्त्र के उपदेश से वेद पढ़ने का प्रारम्भ हो जाता है। आचार्य के इस उपदेश में गायत्री मन्त्र का उच्चारण व उसके अर्थ का ज्ञान कराकर परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना का पाठ पढ़ाया जाता है। यह पाठ जहाँ गुरुकुल में आचार्य के द्वारा होता है, वहाँ प्रथम गुरु माता का भी कर्त्तव्य बनता है कि वह भी बालक को गायत्री मन्त्र का उपदेश अवश्य कर दिया करे। गायत्री मन्त्र की विशेषता है कि इस मन्त्र के द्वारा परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करने से उपासक के मन में भरे हुए उसके अविद्या आदि सब क्लेश भस्म हो जाते हैं, क्योंकि वह उपासक इस मन्त्र के अनुसार अपना पवित्र आचरण करता चलता है। योग में सफलता प्राप्त करने के लिये मन में विद्यमान सब क्लेशों को भस्म करना आवश्यक है। इस प्रकार प्रथम विद्याऽध्ययन व तत्पश्चात् वेदाऽध्ययन करने का व्रत लेकर शिक्षा से लेकर आयुर्वेद पर्यन्त 14 विद्याओं को पढ़कर महाविद्वान् होकर अपने और सब जगत् के कल्याण और उन्नति करने में तत्पर रहना चाहिये।

आर्य समाज के द्वितीय नियम की वेदमूलकता

ले.-वीरेन्द्र कुमार अलंकार अध्यक्ष, दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज् एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

(गतांक से आगे)

ससीम की शक्तियाँ ससीम व जीर्णशील होती हैं और असीम की शक्तियाँ असीम व अजर होती हैं। वेद कहता है कि परमेश्वर, तेरी अजर अमर प्रकाशमयी शक्तियाँ सर्वत्र विचरती हैं-उद्यस्य ते नवजातस्य कृष्णोऽग्रे चरन्त्यजरा: इधाना: (सामवेद-1221)।

हे परमेश्वर, तू यविष्ठ अर्थात् अजर है और मनुष्यों की रक्षा करता है, उनकी स्तुति सुनता है और पालन करता है-त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄ: पाहि शृणुहि गिर:। रक्षा तोकमुत त्मना।। (सामवेद-1246)।।

हे ईश्वर, हम तुझ प्रकाशस्वरूप और अजर अमर का ध्यान करते हैं-आ त अग्र इधीमहि द्युमन्तमजरम् (सामवेद-417 व 1022)।

शास्त्रों में ईश्वर को अमृत कहा गया है। अमृत व अमर का अर्थ है-अविनाशी। विद्ययाऽमृतश्नुते (यजुर्वेद-40.14)। विद्या से अविनाशी परमात्मा को प्राप्त होता है। यहाँ ब्राह्मणकार कहते हैं-अमृतं वै प्रणव:।

अजर व अमर की सम्पूर्ण शक्ति व सामर्थ्य भी अजर अमर ही होगा। इसलिए उसका काव्य भी अजर अमर है-पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति (अथर्ववेद-10.8.32)।

ईश्वर युवा है, न वह कभी शिशु था और न ही कभी वृद्ध होगा। यहाँ युवा का तात्पर्य अजर ही है-येषामिन्द्रो युवा सखा (सामवेद-1337 व 1340)।

वेद में ईश्वर को अव्यय कहा गया है। अव्यय का अर्थ अमर व अविनाशी है। शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्यो:। पवन्ते वारे अव्यये (सामवेद 1035)। वैदिक भाषा में अव्यय का अर्थ अविनाशी (अमर) परमेश्वर है-तदव्ययीभूतमन्वर्थवाची शब्दो व व्येति कदाचनेति।

स्वामी जी ने जो ईश्वर को अजर अमर कहा है, वह वस्तुत: वेद और उपनिषदों की भाषा है।

15. अभय विशेषण की वेदमूलकता-जो तत्व सर्वशक्तिमान्, अनादि, अनन्त, न्यायकारी, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर व अमर है, वह सभय कैसे हो सकता है? भय के कारण दुर्बलता व अभाव होते हैं। अत: सर्वशक्तिमान् व परिपूर्ण ईश्वर तो अभय ही है। संसार में मनुष्य के लिए सबसे बड़ा भय तो मृत्यु का भय है। वेद कहता है-मृत्योर्मा विभे:। यहाँ ईश्वर की अभयता का उल्लेख करना इसलिए आवश्यक है कि मनुष्य जिसकी उपासना या सान्निध्य श्रद्धापूर्वक करता है, उसके गुणों या दुर्गुणों का प्रभाव अवश्य पड़ता है। ईश्वर सर्वथा भयरहित है। इसलिए जो अभयस्वरूप ईश्वर की उपासना करेगा उसमें भय क्षीण होने लगेगा। वेद में ईश्वर को आत्मबल देने वाला कहा गया है-य आत्मदा बलदा (यजुर्वेद-25.13)। पुनश्च यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शंन्न, कुरु प्रजाभ्योऽभयं न: पशुभ्य:। यजुर्वेद (36.17)। यह ईश्वर की अभयता का प्रमाण है। अभयस्वरूप ब्रह्म को समझने के बाद भय छूट जाता है-यतो वाचो निवर्तन्ते। अप्राप्त मनसा सह। आनन्द ब्राह्मणो विद्वान्। न बिभेति कदाचनेति (तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मवल्ली-4)। इस सब के आधार पर स्वामी जी का यह कथन बड़ा स्पृहणीय है-परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल पृथक होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा, वह पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर लेगा। क्या यह छोटी बात है?

कुछ पौराणिक कथाओं में या साहित्यिक शैली में ईश्वर को सभय दिखाया गया है। दैत्यों के उत्पात से ईश्वर को भयभीत दिखाना तात्त्विक दृष्टि से तर्कहीन है।

16. नित्य विशेषण की वेदमूलकता-जीव के ज्ञान, कर्म व स्वभाव में क्रमिकता और न्यूनता होती है, जबकि ईश्वर के ज्ञान, कर्म व स्वभाव सदा नित्य ही हैं। परमेश्वर नित्यध्रुव है-यो नित्यध्रुवोऽचलोऽविनाशी स नित्य:। उसके प्रत्येक कर्म में नित्यता है। इसलिए जैसे जीवात्मा और परमात्मा की सूक्ष्मता में अन्तर है, वैसे इनकी नित्यता में भी अन्तर है। ईश्वर एकरस है। वह कूटस्थ है। कूटस्थ की निरुक्ति देखिए-य: कूटस्थेऽनेकविधव्यवहारे स्वस्वरूपेणैव तिष्ठति स कूटस्थ: परमेश्वर:, जो सब व्यवहारों में व्याप्त और सब व्यवहारों का आधार होके भी किसी व्यवहार में अपने स्वरूप को नहीं बदलता, इससे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है।

योगियों और विद्वानों के ज्ञान में वृद्धि-ह्रास होता रहता है। किन्तु परमेश्वर के ज्ञान में न वृद्धि होती है और न ही क्षय। इसलिए वह त्र्यम्बक है। त्र्यम्बक का अर्थ है-अमति येन ज्ञानेन तदम्बं, त्रिषु कालेष्ठेकरसं ज्ञानं यस्य स:। नित्य ईश्वर का प्रत्येक कर्म नित्य है, ज्ञान नित्य है, सृष्टिक्रम नित्य है। यह नित्यता उसमें स्वरूपगत है। परमेश्वर को नक्षत्र भी इसीलिए कहा जाता है क्योंकि वह नित्य है। ब्राह्मणकार ने नक्षत्र की यह निरुक्ति की है-तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वं यन्न क्षियन्ति। नित्य परमात्मा की वाणी भी नित्य है। इसलिए भारतीय मनीषा वेद की नित्यता स्वीकार करती है-अत ईश्वरोक्तत्वान्नित्य-धर्मकत्वाद् वेदानां स्वत:प्रमाण्यं सर्वविद्यावत्वं सर्वेषु कालेष्वव्य-भिचारित्वान्नित्यत्वं च सर्वेर्मनुष्यै-र्मन्तव्यमिति सिद्धम्।

17. पवित्र विशेषण की वेदमूलकता-ईश्वर को शुद्ध और पापरहित कहा गया है-शुद्धमपापविद्धम् (यजुर्वेद-40.7)। शुद्ध का अर्थ है अविद्यादि दोषों से पृथक्। कोई पाप या दोष न होने से वह पवित्रतम है। कुछ अन्य वैदिक प्रमाण देखिए-

ईश्वर को शोचिष्ठ कहा गया है-तं त्वा शोचिष्ठ दीदिव: सुम्नय नूनमीमहे सखिभ्य: (यजुर्वेद 3.26)। शोचिष्ठ का अर्थ है पवित्रतम।

पवित्रतम होने से ईश्वर पवित्र विद्याओं का दाता है। वह स्वयं पवित्र है, इसीलिए उससे पवित्रता की प्रार्थना की गई है-यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्रे विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनातु मा (यजुर्वेद 17.41)।

वह पवमान और पोता (शुद्धस्वरूप) है।

पवमान: सो अद्य न: पवित्रेण विचर्षणि:। य: पोता स पुनातु मा (यजुर्वेद 17.42)।

इन्द्र शुद्धो न आ गहि (सामवेद-1404)-हे ऐश्वर्यवान् परमेश्वर, शुद्धस्वरूप हमें प्राप्त हो।

दिवो धर्त्तासि शुक्र: (सामवेद-1243)-वह शुद्धस्वरूप द्युलोक का धारण करने वाला हो।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते (सामवेद-565)

हे ब्रह्मणस्पति-वेदों के स्वामी ईश्वर, तेरी पवित्रता विस्तृत है।

पावकवर्चा: शुक्रवर्चा अनून-वर्चा उदियर्षि भानुना (सामवेद-1817)

हे परमेश्वर, तू पवित्रकारक तेज़ वाला, शुद्ध तेज़ वाला, पूर्ण तेज़ वाला अपनी दीप्तियों से प्रकाशित हो रहा है।

इस प्रकार वेदों में पवमान, पूयमान, पावक, शुक्र, पोता आदि अनेक विशेषणों का प्रयोग ईश्वर के लिए हुआ है, जिससे उसके पवित्र स्वरूप का कथन बार-बार हुआ है।

18. सृष्टिकर्ता विशेषण की वेदमूलकता-वैदिक मन्त्रों में ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता कहा गया है। सृष्टिकर्त्ता का तात्पर्य यह नहीं है कि ईश्वर ने जीवों या मूलप्रकृति को उत्पन्न किया। ईश्वर तो निमित्त कारण है सृष्टि का और प्रकृति उपादान कारण है। ईश्वर की नियामकता का यह वैदिक प्रमाण देखिए-भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् (यजुर्वेद-13.4), एक इद् राजा जगतो बभूव (यजुर्वेद-23.3)। वेद में पुन: पुन: आने वाले सविता शब्द का अर्थ ही है-सब जगत् को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर। ऋषि दयानन्द ने सविता का यह निर्वचन किया है-सर्वेषां वसूनामग्निपृथिव्यादीनां त्रयस्त्रिंशतो देवानां प्रसविता अर्थात् तैंतीस देवों (आठ वसु-पृथिवी, अग्नि, वायु, चल, आकाश, चन्द्रमा और सूर्य: ग्यारह रुद्र-प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाम, कुर्म, कृकल, देवदत्त, धनजंय और जीवात्म: बारह आदित्य अर्थात् बारह मास: इन्द्र (बिजली) और प्रजापति (यज्ञ) की उत्पत्ति करने वाला)। ईश्वर प्राकृतिक पदार्थों व जीवात्मा को अपनी स्वाभाविक शक्ति से नियमन करता हुआ सृष्टि का निर्माण करता है। स्वामी जी ने सविता शब्द को षुञ् अभिषवे तथा

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-आर्य समाज के द्वितीय नियम की वेदमूलकता

षूङ् प्राणिगर्भविमोचने इन धातुओं से व्युत्पन्न माना गया है-यश्चराचरं जगत् सुनोति सूते चोत्पादयति स सविता परमेश्वरः, जो सब चराचर जगत् की उत्पत्ति करता है, इसलिए परमेश्वर का नाम सविता है। वह सर्वज्ञ परमेश्वर अपनी व्यापक शक्ति प्रकृति से संसार के समस्त पदार्थों का उसी प्रकार निर्माण करता है, जैसे रात्रि सूर्य के उदय के लिए उषा को आकाश में स्थान देती है-इद्रं श्रेष्ठं ज्योतिषां ज्योतिरागाच्चित्रः प्रकेतो अजनिष्ठ विभ्व। यथा प्रसूता सवितुः सवायैवा रात्र्युषसे योनिमारैक् (सामवेद-1647)। वैदिक ऋचा कहती है कि यह सब जगत् जिससे उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय को प्राप्त होता है, वह परमात्मा है-इयं विसृष्टिर्यत आ बभूव यदि वा दधे यदि वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन् सो अङ्ग वेद यदि वा न वेद (ऋग्वेद-10.129.7)। उपनिषद् कहती है कि परमेश्वर से ही प्राणियों के जन्म होते हैं, उनकी पालना होती है, वही चराचर जगत् का कारण है-यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते, येन जातानि जीवन्ति, यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति तद्विजिज्ञासस्व, तद्ब्रह्मेति। (तैत्तिरीयोपनिषद्-3.1)। विश्व का कर्ता, ज्ञाता, काल का भी काल, प्रकृति और जीवात्म का स्वामी तथा बन्ध व मोक्ष का हेतु वह ईश्वर ही है-स विश्वकृद्विश्वविदात्मयोनिर्ज्ञः कालाकालो गुणी सर्वविद्यः। प्रधानक्षेत्रपतिगुणेशः संसारमोक्षस्थितिबन्धहेतुः।। (श्वेताश्वतरोपनिषद्-6.15)। यह वैदिक रूपक भी बड़ा स्पृहणीय है कि यह भूमि जिसका पादतल है और अन्तरिक्ष उदर है, जिसने द्यौ को सिर बनाया है, सूर्य और चन्द्रमा जिसकी आँख हैं, अग्नि को मुख बनाया है, वायु जिसके प्राण-अपान हैं, किरणें जिसकी आँख हैं और दिशाओं को जिसने प्रज्ञानी-ज्ञान कराने वाली (कान) बनाया है, उस ज्येष्ठ ब्रह्म को नमस्कार है-यस्य भूमिः प्रमान्तरिक्षमुतोदरम्। दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः। यस्य सूर्यश्चक्षुश्चद्रमाश्च पुनर्णवः। अग्निं यश्चक्र आस्यं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः। यस्य वातः प्राणापानौ चक्षुरङ्गि रसोऽभवन्। दिशो यश्चक्रे प्रज्ञानीस्तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।। (अथर्ववेद-10.47.32-34)।। यह भी ध्यान दीजिए कि प्रत्येक काल में यह सृष्टि ऐसी ही होती है-सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः।।

(ऋग्वेद-10170.3)।।

एक प्रश्न यह भी किया जाता है कि यदि सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर है तो वह सृष्टि क्यों बनाता है? यदि जगत् ही न हो तो दुःख, दुरित, क्लेश, पीडा भी नहीं होंगे। अतः सृष्टिरचना का प्रयोजन क्या है?

इसका बड़ा ही व्यावहारिक समाधान दयानन्द दर्शन में मिलता है। कल्पना कीजिए आप में लेखन का गुण है, तो उसकी सार्थकता उसके प्रकटीकरण में ही है। यदि किसी में कहानी या कविता के लेखन के गुण हैं, तो उसे कहानी या कविता लिखनी चाहिए या नहीं? सब कहेंगे लिखना चाहिए। किसी में गायन का गुण है तो इस गुण की सार्थकता इसी में है कि वह गीत गाए। क्रिकेट न खेले, गीतकार गीत न लिखे, रेस्लर रेस्लिंग न करे, वेद का विद्वान वेद पर न कुछ बोले न लिखे तो फिर गुणवत्ता कैसी? क्योंकि गुण की सार्थकता उसके प्रस्तुतिकरण में ही है। ईश्वर में सृष्टि को रचने का सामर्थ्यरूप गुण है, अतः उसकी सार्थकता इसी में है कि वह सृष्टिनिर्माण करे। इस प्रकार ईश्वर ही सृष्टिकर्ता है।

19. उसी की उपासना करनी योग्य है की वेदमूलकता-उसी की उपासना करनी योग्य है, इससे यह अर्थापति स्वयं हो जाती है कि उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करें। ईश्वर का स्वरूप समझ में आ जाए तो फिर कौन व्यक्ति उस ईश्वर से अतिरिक्त किसी की उपासना करेगा। यह स्वाभाविक बात है कि यदि किसी को राजा, अमात्य, सेनापति, राजसेवक-इनकी उपासना (सेवा) का अवसर मिले तो बुद्धिमान व्यक्ति राजा का ही चयन करेगा। हमारे समक्ष भी अनेक विकल्प हैं। उनमें एक विकल्प इस ब्रह्माण्ड का अधिष्ठाता है, तो क्या उस व्यक्ति को बुद्धिमान मानेंगे जो सम्पूर्ण जगत् के स्रष्टा, सर्वशक्तिमान, परम दयालु परमेश्वर को छोड़ कर किसी अन्य की उपासना करे? इसलिए एकमात्र परमेश्वर ही उपासनीय हैं-सर्वेर्मनुष्यैर्येन परमेश्वरेण पृथिवीसूर्य-त्रसरेणुभेदेन त्रिविधं जगद् रचयिता ध्रियते स एवोपासनीयः। ईश्वर के अतिरिक्त किसी की भी उपासना नहीं करनी चाहिए-सर्व एकमद्वितीयमीश्वरं विहाय कस्याप्युपासनं कदाचिन्नैव कुर्युः। ईश्वर का जो स्वरूप बताया गया है, उसे योगाभ्यास से जानकर उपासना करें-हे मनुष्योः। यस्य निर्माणेन सर्वे कालावयवाः जाता यच्चोर्ध्वमधो मध्ये पार्श्वतो दूरे निकटे वा कथयितुमशक्यं तत् सर्वत्र पूर्ण ब्रह्मास्ति, तद्योगाभ्यासेन विज्ञाय सर्वे भवन्त उपासीरन्। वेद निर्देश देता है कि उस पवित्र परमात्मा की स्तुति करो-सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत (सामवेद-568), तं. वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत (सामवेद-567)। वेद कहता है कि उस परमात्मा की प्रार्थना तथा शरणागति से अपने को रक्षण तथा बलादि गुण प्राप्त होंगे, सब जगत् पर करुणा करने वाला वह एक ही है-तमूतो रणयञ्छूरसातौ त क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम्। स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान्नो भवत्विन्द्र ऊती।। (ऋग्वेद-1.100.7)।।

एक प्रश्न यह उपस्थित होता है कि ईश्वर का स्वरूप हमने जान लिया है, यह भी मान लिया कि वह सृष्टिकर्ता है और कर्मफलदाता है, किन्तु उसकी उपासना क्यों की जाए? यहाँ सत्यार्थप्रकाश (सप्तम समुल्लास) का यह सन्दर्भ देखिए-

प्रश्न-क्या स्तुति आदि करने से ईश्वर अपना नियम छोड़ स्तुति, प्रार्थना करने वाले का पाप छुड़ा देगा?

उत्तर-नहीं।

प्रश्न-तो फिर स्तुति, प्रार्थना क्यों करना?

उत्तर-उसके करने का फल अन्य है।

प्रश्न-क्या है?

उत्तर-स्तुति से ईश्वर में प्रीति उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना, प्रार्थना से निरभिमानता उत्साह और सहाय का मिलना, उपासना से परब्रह्म से मेल और उसका साक्षात्कार होना।

स्वामी जी के इस कथन पर भी ध्यान दीजिए-इसका (स्तुति) फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण कर्म स्वभाव आपने भी करना। जैसे वह न्यायकारी है, तो आप भी न्यायकारी होवे और जो केवल भांड के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपने चरित्र नहीं सुधारता उसका स्तुति करना व्यर्थ है।

अभिमान ही गृहक्लेश व सामाजिक क्लेश का मूल है। आत्मपतन का आरम्भ अभिमान से ही होता है। निरभिमानता संस्कृति है और अभिमान विकृति। निरभिमानता से व्यक्ति में गुणग्राहकता की शक्ति बढ़ती है। यह निरभिमानता प्रार्थना का फल है। प्रार्थना गुणरूपी लता की वृद्धि में खाद का काम करती है। इससे मनोभूमि अत्यन्त उर्वरा हो जाती है। उपासना का अभिप्राय है परमेश्वर के सान्निध्य का अनुभव करना और इसका फल यह है-जैसी शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए इससे इसका फल पृथक् होगा परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा, वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है, क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिए दे रखे हैं, उसका गुण भूल जाना, ईश्वर को न मानना कृघ्नता और मूर्खता है। उपासना के सुख को वाणी से कहना सम्भव नहीं है-

समाधिर्निर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत्सुखं भवेत्।
न शक्यते वर्णयितुं गिरा तथा स्वयं तदन्तः करणेन गृह्यते।।
(मैत्रायण्युपनिषद्-4.3.9)।

इस प्रकार आर्य समाज के इस नियम में वेद व उपनिषदों में प्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का अत्यन्त सूत्रात्मक व सारगर्भित विवेचन हुआ है तथा इस नियम का प्रत्येक पद वेदमूलक है। यह नियम अपने आप में ईश्वरविषयक पूरा दर्शन है।

पृष्ठ 2 का शेष-आध्यात्मिक चिन्तन और कोरोना काल

करने लगते है।

गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि विद्याओं में अध्यात्म विद्या मैं हूँ।

अध्यात्म विद्या विद्यानांवाद: प्रवदतामहम्। 10/32

अत: ''अध्यात्म'' एक विद्या है और ईश्वरीय स्वरूप है। हमारे वेदों में स्वाध्याय को विशिष्ट महत्ता प्रदान की गई है। स्वाध्याय से ज्ञान बढ़ता है और ज्ञान प्रकाश (ज्योति) कहा ही पर्याय है। सभी जीवों में वहीं ज्योति विद्यमान है। गुरुवाणी के अनुसार सभ महि जोति जोति है सोई। विसु के चानणु सभ महिचानणु होई।।

वह ज्ञान का प्रकाश सभी जीवों में विद्यमान है लेकिन अज्ञान के अन्धकार से ढ़का हुआ है। गीता के अनुसार।

अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुहयन्ति जन्तव: 5/15

अत: मनुष्य को अध्ययन के द्वारा अथवा गुरु के मार्ग दर्शन से अज्ञान को दूर कर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। यह ज्ञान ही मनुष्य को सभी संकटों और कष्टों से मुक्त करता है। स्वाध्याय भी एक साधना ही है।

भारतीय जीवनशैली में हमारे खान-पान और आध्यात्मिक साधना में ऐसी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ है जिन्हें अपनानें पर हम कठिन से कठिन भौतिक व आध्यात्मिक समस्या का समाधान कर सकते है। आयुर्वेदाचार्यों ने कोरोना संकट के समय ऐसी चीजें बताई है। जो हमारे घर की रसोई में ही उपलब्ध है और हम उनसे अपनी शारीरिक क्षमता को और आन्तरिक शक्ति को बढ़ा कर कोरोना जैसे भयंकर जीवाणु को समाप्त कर सकते है।

ईश्वर को हम किसी भी रूप में स्मरण करे। उसको किसी भी नाम से पुकारें। वह सदा हमारा कल्याण ही करता है। गुरवाणी में ईश्वर के नाम को ही हर रोग (पीड़ा) की औषधि माना गया है। सरब रोग का औखध नामु। और राम चरित्र में भी नाम की महिमा इस प्रकार कही गई है।

कलियुग केवल नाम अधारा
सिमर सिमर नर उतरहि पारा।।

किसी भी रूप में प्रार्थना, अरदास, आरती पूजन करें उसकी कृपा अवश्य होती है। गायत्री मन्त्र को सभी मन्त्रों में श्रेष्ठतम माना गया है। यह आत्मोन्नति और वैयक्तिक अभ्युदय प्रदान करता है। जो इसका निरन्तर जाप करता है। उसके लिए यह रामबाण औषधि है। इस मन्त्र द्वारा हम ईश्वर से आध्यात्मिकता और बुद्धि की कामना करते हैं। आध्यात्मिक साधना के लिए सद्बुद्धि और एकाग्रता अनिवार्य है। बुद्धि द्वारा ज्ञान का प्रकाश प्राप्त करके ही हम अज्ञान रूपी अन्धकार को दूर करते है। इसी के लिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते है असतो मा सहगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्यार्मा अमृत गमय। इससे हमें सन्मार्ग की ओर बढ़ने का बल मिले और हमें संकटों से मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त हो। वेदों में वर्णित अक्षुण्ण विद्या भण्डार हमें जीवन जीने की कला सिखाता है। यह ईश्वर का ही स्वरूप है क्योंकि ईश्वर ज्ञान स्वरूप है ज्योतिस्वरूप है। इसीलिए मन्त्र हमारे जीवन के संकटों को दूर करने में सक्षम हैं। वेदवाणी और गुरुवाणी दोनों ही मानव के लिए कल्याणकारी हैं।

योग साधना अथवा प्राणायाम द्वारा हम अपने अन्दर की शुद्धि द्वारा इस मारक संक्रमण से मुक्त हो सकते है। योग के आठों अंगों से मनुष्य की कायाकल्प हो सकती है। ये आठ अंग अध्यात्म के अभिन्न अंग है जो इस प्रकार हैं (1) यम (2) नियम (3) आसन (4) प्राणायाम (5) प्रत्याहार (6) धारणा (7) ध्यान (8) समाधि।

इस कोरोना काल में हमने अतीत की ओर देखना आरम्भ कर दिया है। हमें अपनी अमीर विरासत और भारतीय संस्कृति की महत्ता ज्ञान होने लगी है। हमारे वेदों में अक्षुण्ण भण्डार है। वेदा: सर्व विद्यानां निधानं स्वयु। संस्कृत भाषा केवल भाषा ही सही है अपितु देवभाषा के रूप में वरदायिनी है। संस्कृत भाषा के मन्त्रो के शुद्ध उच्चारण करने से ही स्नायु तन्त्र का प्राणायाम स्वत: हो जाता है। इन्हें मन्त्र शक्ति भी कह सकते है। इससे अनेक रोगों का निदान किया जा सकता है। यह सब आस्था विश्वास और इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है। यह तो वैज्ञानिक भी स्वीकार कर चुके है कि यज्ञ में आहुतियाँ डालने से पर्यावरण शुद्ध होता है और अनेक जीवाणु नष्ट होते है। यही भारत की आध्यात्मिक शक्ति है। इसी से हम कालजयी बनें। आवश्यक है संस्कृति-संस्कृत-और संस्कार को पुन: धारण करने की। अध्यात्म के मार्ग पर अग्रसर होने की। विश्व हमारा अनुसरण करेगा। हम विश्व विजयी होंगे। इसी मार्ग पर चलकर भारत शीघ्र ही कोरोना मुक्त होगा।

शोक समाचार

आर्य समाज लारेंस रोड़ अमृतसर के प्रधान प्रोफैसर अरूण महाजन जी के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गहरा दु:ख व्यक्त करती है। श्री अरूण महाजन जी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। श्री महाजन जी अमृतसर की अनेकों संस्थाओं के साथ जुड़कर मानवता की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहा करते थे। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से उनकी तीनों बेटियों द्वारा किया गया। प्रोफैसर अरूण महाजन जी के निधन से आर्य समाज लारेंस रोड़ की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब प्रोफैसर अरूण महाजन जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करती है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शोक संवेदना

आर्य समाज मोहाली के पुरोहित पं. श्रुतिकान्त आर्य का पिछले दिनों अल्पायु में देहान्त हो गया। पं. श्रुतिकान्त आर्य जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। पं. श्रुतिकान्त जी आर्य जालन्धर के प्रसिद्ध कर्मकाण्ड़ी विद्वान् पं. मनोहर लाल आर्य के ज्येष्ठ सुपुत्र थे। उन्हें बचपन से ही अपने परिवार से आर्य समाज की विचारधारा विरासत में मिली थी। उन्हीं विचारों को अपने जीवन में धारण करते हुए पं. श्रुतिकान्त आर्य जी आर्य समाज का कार्य कर रहे थे। उनके आकस्मिक निधन से जहां परिवार की अपूरणीय क्षति हुई है वहीं पर आर्य समाज की अत्यधिक क्षति हुई है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री श्रुतिकान्त आर्य जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करती है। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य विद्या परिषद पंजाब एवं पंजाब की समस्त आर्य समाजों की ओर से उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार को इस दु:ख को सहन करने की धैर्य शक्ति प्रदान करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

हार्दिक श्रद्धांजलि

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी के देहावसान पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गहरा दु:ख व्यक्त करती है। स्वामी धर्ममुनि जी जीवन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित था। ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का पालन करने वाले आर्य समाज के सच्चे सिपाही थे। ऐसे मूर्धन्य सन्यासी के हमारे बीच से चले जाने से आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति हुई है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को उनके कर्मानुसार शान्ति एवं सद्गति प्रदान करके अपने चरणों में स्थान दें। हम सभी पूज्य स्वामी जी के पद्चिह्नों पर चलने का प्रयास करें।

प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

आर्य कॉलेज लुधियाना में अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन

श्री सुदर्शन शर्मा जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब–जालन्धर

डा.सत्यपाल सिंह जी सांसद एवं कुलाधिपति गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय –हरिद्वार

श्री विनय आर्य जी महामंत्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा–नई दिल्ली

डा. विनय विद्यालंकार जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखंड

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा संचालित प्रतिष्ठित महाविद्यालय आर्य कॉलेज लुधियाना में 10 जून 2020 को आर्य समाज का विश्वजनीन प्रभाव–कोविड 19 के संदर्भ में विषय पर अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं सांसद डॉ. सत्यपाल सिंह जी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड़ के प्रधान डॉ. विनय विद्यालंकार जी ने भाग लिया। यह वेबिनार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रेम भारद्वाज जी विशेष अतिथि के रूप में इस वेबीनार में उपस्थित हुए। **सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा** जी ने सबका स्वागत करते हुए कहा कि आज बहुत ही हर्ष का विषय है कि आर्य कॉलेज लुधियाना के द्वारा आर्य समाज का विश्वजनीन प्रभाव– कोविड 19 के संदर्भ में विषय पर अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया है। उन्होंने सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुआ कहा कि आज पूरा विश्व कोरोना नामक महामारी से लड़ रहा है। इस महामारी से लड़ने के लिए हमें अपनी वैदिक संस्कृति के अनुसार चलना होगा। हमें घर–घर यज्ञ करने के लिए लोगों को प्रेरित करना चाहिए। कॉलेज की प्राचार्या डॉ. सविता उप्पल जी ने कहा कि आर्य कॉलेज लुधियाना आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रमुख शैक्षणिक संस्था है। इस संस्था ने अनेक बुद्धिजीवियों, शिक्षाविदों, विश्वस्तरीय खिलाड़ियों, संगीतरत्नों का निर्माण किया है। यह संस्था शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने के लिए सदैव प्रयासरत रहती है । कार्यक्रम की संयोजिका सूक्ष्म आहलूवालिया ने यज्ञ और वैश्विक कल्याण–कोविड–19 के संदर्भ में विषय पर सर्वप्रथम वक्ता के रूप में डॉ. सत्यपाल सिंह जी को आमन्त्रित किया। **डॉ. सत्यपाल सिंह जी** ने समस्त आर्यबन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में लिखा है कि–संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। आर्य समाज इसी उद्देश्य के अनुसार सर्वे भवन्तु सुखिन:, लोका समस्ता: सुखिनो भवन्तु की भावना से जातिगत भेदभाव से ऊपर उठकर समस्त प्राणिमात्र के कल्याण के लिए कार्य करता है। यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म अर्थात् यज्ञ संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म है। यज्ञ से पूरे विश्व का कल्याण होता है। अगर आज संसार यज्ञ की परम्परा को अपना ले तो अनेकों बीमारियों से बचा जा सकता है। इसीलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रत्येक मनुष्य के लिए पञ्चमहायज्ञों का विधान किया है।

आर्य समाज की शिक्षाएं वर्तमान में कितनी प्रासंगिक विषय पर अपने विचार रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री **श्री विनय आर्य जी** ने कहा कि आज पूरा विश्व हमारी संस्कृति को अपना रहा है। आज लोग हाथ मिलाने की जगह दोनों हाथ जोड़कर नमस्ते कर रहे हैं। मांसाहारी लोग भी शाकाहार को अपना रहे हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की शिक्षाएं सार्वभौम हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके कोई नया मत, मजहब सम्प्रदाय स्थापित नहीं किया था अपितु विश्व के कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया था। आर्य समाज की शिक्षाओं से व्यक्ति मानव कल्याण के लिए कार्य करता है क्योंकि आर्य समाज का नियम है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। तीसरे वक्ता के रूप में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड़ के प्रधान **डॉ. विनय विद्यालंकार** जी ने वैदिक विचारधारा से वैश्विक समस्याओं का समाधान विषय पर प्रकाश ड़ाला। उन्होंने कहा कि आज भोगवाद की संस्कृति के कारण पूरा विश्व प्रकृति का दोहन कर रहा है। वैदिक संस्कृति भोग के साथ त्याग का भी संदेश देती है। वैदिक संस्कृति का आदर्श वाक्य तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा: अर्थात् संसारिक पदार्थों का भोग त्याग के साथ करें। आज पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी से बचने के लिए हमें वैदिक विचारधारा को अपनाना होगा। वैदिक विचारधारा के अनुसार चलने से ही विश्व की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। वैदिक विचारधारा किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं अपितु पूरे प्राणीजगत् के कल्याण के लिए है। इसलिए आज हमें भोगवाद की संस्कृति को छोड़ कर त्यागवाद की संस्कृति को अपनाना होगा। अंत में कॉलेज सचिव श्रीमती सतीशा शर्मा जी ने सभी वक्ताओं, अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया। इस वेबीनार में देश–विदेश से लगभग 50,000 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया।

(गतांक से आगे) आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर के प्रधान श्री कमल किशोर जी सपरिवार हवन करते हुये। चित्र दो में श्रीमती नीरू कपूर जी परिवार सहित हवन करते हुये जबकि चित्र तीन में स्त्री आर्य समाज, माडल टाउन की प्रधाना श्रीमती सुशीला भगत जी अपने घर में हवन करते हुये।

आर्य समाज नंगलटाउनशिप के प्रधान श्री सतीश अरोडा जी सपरिवार यज्ञ करते हुये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप प्रधान चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट अपने घर हवन करते हुये चित्र तीन में आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के पूर्व प्रधान श्री ओम प्रकाश भाटिया जी अपने घर में हवन करते हुये। श्रीमती मधु शर्मा जी जालन्धर में अपने घर में हवन करते हुये।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड़ जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित।
सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**